निमा.k, परवाह करने वाले समाज का

मीनाक्षी उमेश



"यह धरती हमें अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली है। इसे हमने अपने बच्चों से उधार लिया है।"

हमारे बच्चे

"तुम्हारे बच्चे दरअसल तुम्हारे बच्चे नहीं हैं।

वे जीवन की अपने प्रति उत्कण्ठा के बेटे और बेटियाँ हैं।

वे तुम्हारे माध्यम से जरूर आते हैं पर तुमसे नहीं आते हैं,

और यद्यपि वे तुम्हारे साथ होते हैं, पर वे तुम्हारे नहीं होते।" – खलील जिब्रान

वे फूलों की तरह होते हैं, और हर एक बच्चा अपने आप में खास होता है। वे आईने की तरह होते हैं और हमारे विचारों व कर्मों को प्रतिबिम्बित करते हैं। वे उन पक्षियों की तरह होते हैं जो उड़ना चाहते हैं और दुनिया के बारे में जानना चाहते हैं। बच्चे पैदा होते से ही सीखना शुरू कर देते हैं। वे जिज्ञासु होते हैं, सहज बोध से चीजों को समझने की कोशिश करते हैं, सृजनशील होते हैं, नई–नई चीजें करने की कोशिश करते हैं इत्यादि। दुर्भाग्यवश, जल्दी ही हमारे सामाजिक मानदण्डों की सीमाओं द्वारा उनके पर कतर दिए जाते हैं।

बच्चों को खुद के साथ और दूसरे बच्चों के साथ समय बिताने देने की जरूरत होती है। उन्हें एक–दूसरे के साथ संवाद करने की जरूरत होती है; वे एक–दूसरे के साथ अपनी भावनाएँ और अनुभव बाँटना चाहते हैं, और वे अपने आप से चीजें करना/ खोजबीन करना चाहते हैं। आत्म–निर्भरता के विकास में काम करने की भूमिका को समझाते हुए मारिया मॉन्टेसरी बताती हैं कि बच्चों को अपने दिमाग में दुनिया का अनुकरण करने वाली संरचना बनाने के लिए समय चाहिए होता है और गूढ़ अवधारणाओं को समझने लायक बनाने के लिए ठोस वस्तुओं की जरूरत होती है। बच्चों को अपने से रचनात्मक कार्य कर सकने की स्वतंत्रता होना चाहिए। सीखने से जुड़ी सामग्री को सम्भालने और दिए गए कार्य को पूरा करने की प्रक्रिया और पद्धति बच्चों के भीतर आत्म–अनुशासन और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करती है। महात्मा गाँधी ने ऐसी शिक्षा व्यवस्था का सपना देखा था जहाँ बच्चे अलग–अलग रचनात्मक कार्य करने के द्वारा सीखते हैं और उससे सीखने की प्रक्रिया भी समझते हैं। साथ ही, काम करने के द्वारा उन्हें अपने भीतर परिपूर्णता और सन्तोष की अनुभूति होती है।

हमारे व्यवहार और हमारे सरोकारों पर हमारी शिक्षा का बहुत असर पड़ता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को तथ्यों का अध्ययन करवाकर सिखाया जाता है। उन्हें 'शीर्ष पर' रहने के लिए एक तनावपूर्ण प्रतिस्पर्धा में धकेल दिया जाता है। यह 'योग्यता की उत्तरजीविता' के लिए एक लड़ाई बन जाती है। उसमें चिन्तन–मनन के लिए कोई समय नहीं होता। ये बच्चे अपने कृत्यों तथा उनके परिणामों की जिम्मेदारी लेना नहीं सीख पाते और उसमें असफल हो जाते हैं।

इस तरह की शिक्षा न सिर्फ बच्चों को धरती माँ से विमुख कर देती है, बल्कि यह उन्हें प्रकृति के साथ उनके जुड़ाव पर निर्भरता के प्रति भी असंवेदनशील बना देती है। यह उन्हें जीवन मूल्यों के महत्त्व से तथा दूसरे लोगों के लिए सहानुभूति के भाव से दूर कर देती है। यह प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा उन्हें परेशान, असहाय और आत्म केन्द्रित बनाकर छोड़ देती है। स्कूल के पहले ही दिन से उन्हें कहीं भी आने–जाने की अपनी स्वतंत्रता पर पहला अवरोध सबसे पहले तब अनुभव होता है जब उन्हें मेज और कुर्सी के बन्धन से बाँध दिया जाता है। इस तरह उनकी ऊर्जा को अवरुद्ध कर दिया जाता है, जिसे बच्चे सामान्यत: यहाँ–वहाँ भागकर और अबाध रूप से हँसकर खर्च करते हैं। बच्चे कुण्ठित और निराश महसूस करते हैं और अपनी इस स्थिति को या तो आँसुओं के द्वारा या फिर हिंसक प्रदर्शन द्वारा व्यक्त करते हैं। कुण्ठा विरोध को लेकर होने वाली सामान्य भावनात्मक प्रतिक्रिया है। कुण्ठा का क्रोध और निराशा से गहरा नाता होता है और यह बच्चे की इच्छाओं की पूर्ति

में उसके द्वारा महसूस की जाने वाली बाधाओं से उपजती है। प्रेरक व्यवहार को बाधित करने से कुण्ठा पैदा होती है। हर बच्चा ऐसी स्थिति में अलग ढंग से प्रतिक्रिया करता है। हो सकता है कि वे इस बाधा को पार करने के लिए तर्कसंगत समस्या–निवारण के तरीके अपनाएँ। यदि ऐसे तरीके असफल हो जाएँ तो वे कुण्ठित होकर अतार्किक व आक्रामक ढंग से व्यवहार करने लग सकते हैं।

इस बारे में लोगों में जागरूकता आई है कि किस प्रकार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था बच्चों के व्यक्तित्व को और उनके माध्यम से समाज को प्रभावित करती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के आत्मसात किए गए पाठ अन्य मनुष्यों, जानवरों और पेड़ों के प्रति बच्चों के निर्दयी रवैयों में अपना योगदान करते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सिर्फ प्रतिस्पर्धा को स्थान देती है। यह ब्रिटिश हुकूमत द्वारा भारत में अपनाई गई 'फूट डालो और राज करो' की नीति का ही विस्तार है। प्रतिस्पर्धा ईर्ष्या, वैमनस्य, अन्याय, लालच और लापरवाही को जन्म देती है। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि आज के कुछ युवाओं का दृष्टिकोण, खासतौर से शहरों में जहाँ प्रतिस्पर्धा पर बहुत अधिक जोर दिया जाता है या तो आत्मघाती होता है या दूसरों के लिए घातक होता है।

अपने बच्चों के अभिभावकों के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम सिर्फ शिक्षा की विषयवस्तु पर ही गौर न करें, बल्कि पूरी शिक्षा व्यवस्था की भी समीक्षा करें, उसकी पुन: पड़ताल करें और नए सिरे से उसकी रचना करें। हमें ऐसी शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो हमारे बच्चों की वह बनने में मदद करे जो उन्हें ऐसे समाज में बनना चाहिए। जहाँ धरती और जीवन के सभी स्वरूपों की फिक्र करने के माध्यम से प्रेम, सहयोग और सामंजस्य को बढ़ावा दिया जाएगा। हमारे पास एक ही धरती है और यही समय है कि हम इसकी परवाह करें और अपने पाठ्यक्रमों की इस तरह से पुनर्रचना करें कि बच्चों के मन में इसके प्रति जिम्मेदारी और संरक्षण की भावनाएँ पैदा हो सकें।

लकड़ी से जुड़े कार्यों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने के उद्देश्य

1. सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया

ज्ञान के किताबीपन को हटाकर, स्कूल की शैक्षणिक प्रक्रिया को बच्चों की अपनी स्वाभाविक ढंग से सीखने की प्रक्रिया व जीवन का ही फैलाव बनाना – जिसका अर्थ हुआ कि ज्ञान हासिल करने का प्रमुख माध्यम अनुभव ही है (पाँच इन्द्रियों तथा छठी इन्द्री, यानी तर्क, के माध्यम से ज्ञान हासिल करना)।



2. अहिंसा

ऐसी शैक्षणिक प्रक्रिया निर्मित करना जिसका मूल तत्व अहिंसा हो। पारम्परिक शिक्षा व्यवस्थाओं में जानकारी और अनुभव के बीच जबरदस्त असन्तुलन होता है जिसकी वजह से विद्यार्थियों में असहमति और असन्तोष का भाव पैदा होता है जिसकी परिणति आन्तरिक व बाहरी हिंसा में होती है।

इस पाठ्यक्रम को प्रक्रिया व उत्पाद, दोनों ही रूपों में अहिंसा के विचार के साथ विकसित किया जा रहा है।

3. अनुभवजन्य सीखना



सीखने का ऐसा वातावरण बनाना जो बच्चे के दिमाग में ज्ञान की अनुभवजन्य प्रगति को प्रोत्साहित करे व उसमें मदद करे।

4. ज्ञान का संश्लेषण

शिक्षकों तथा पाठ्यक्रम को तय करने की प्रक्रिया से जुड़े अन्य भागीदारों में ऐसा नजरिया निर्मित करना कि ज्ञान की प्रक्रिया जैविक होती है। इसके लिए स्वाभाविक रूप से जरूरी होता है कि विद्यार्थी जानकारियों के अंशों को जोड़ने और उन्हें समन्वित करने की क्षमता विकसित करें और इसे विकसित करने में जानकारी का बहुत अधिक योगदान होता है। अपने हाथों से चीजें बनाकर इस क्षमता का बहुत अच्छे से विकास किया जा सकता है। सीखना एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है और अपने हाथों से वस्तुएँ बनाने के द्वारा बच्चे रोजमर्रा की जिन्दगी के साथ अपने जुड़ावों की समझ के साथ सीखे गए सिद्धान्तों से भी जुड़ पाते हैं।

5. स्वायत्तता/ आत्म–निर्भरता

सीखने का ऐसा परिवेश और ऐसी प्रक्रिया निर्मित करना जिसमें सीखने से जुड़ी प्रत्येक इकाई (चाहे वह शिक्षक हो, बच्चे हों या कक्षा, स्कूल, इत्यादि कुछ भी हो) की स्वायत्तता और आत्म–निर्भरता को सुनिश्चित किया गया हो।



पाठ्यचर्या की अनुसरण प्रक्रिया में यह सोच स्पष्ट रूप से तब दिखाई देती है, जब पाठ्यचर्या को विकसित करने के दौरान ही उसमें शिक्षकों और बच्चों, दोनों की भागीदारी व स्वामित्व को आवश्यक मानकर शामिल किया गया हो। ऐसा करने पर पाठ्यचर्या गतिशील और निरन्तर विकास करती हुए बनी रहती है। साथ ही विद्यार्थियों को सामने उपस्थित परिस्थिति का तथा बदलती दुनिया व समाज का सामना करने और समाधान खोजने के लिए तैयार करती है।

6. जानने के देशज तरीके – समेकित / बहुविषयी

ज्ञान की देशज व पारम्परिक व्यवस्थाओं और जानने के तरीकों को स्वीकार करना, उन्हें प्रामाणिक बनाना तथा उनके साथ संवाद को गहरा करना। पाठ्यचर्या में इस उद्देश्य की एक महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति विषयों के प्रति अपनाया जाने वाला समेकित व बहुविषयी दृष्टिकोण होता है।

7. आत्मज्ञान

सहयोगपूर्ण वातावरण में बच्चे को उसकी अपनी क्षमताओं, उसके मजबूत पहलुओं और कमजोर पहलुओं के प्रति संवेदनशील बनाने के द्वारा चरित्र निर्माण करना। अकादमिक अध्ययन में कम रुचि दिखाने वाले बच्चों को सिखाई जाने वाली अवधारणाओं के साथ दूसरे तरीकों से जुड़ पाने के अवसर प्रदान करना और इस तरह उन्हें अकादमिक अध्ययन पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करना।

जब बच्चे अलग–अलग प्रकार की लकड़ियों को छूते हैं, महसूस करते हैं, उन पर कुछ काम करते हैं जैसे पॉलिश करना या उनसे कुछ बनाना, तो उनमें वृक्षों की पहले से कहीं ज्यादा गहरी समझ बन जाती है। इस तरह के काम करने पर उनका अपना–अपना विशेष व्यक्तित्व निखरेगा और वे पर्यावरण के साथ संवेदनशील समानुभूति विकसित करेंगे। आपस में प्रतिस्पर्धा करने के बजाय वे एक–दूसरे की मदद करेंगे। वे सरल उपकरणों को इस्तेमाल करना और उनका रखरखाव करना सीखेंगे जिससे उनके हाथों व आँखों का तालमेल, स्थानों का उपयोग करने की समझ व अनुशासन बेहतर होगा। वे कड़ी मेहनत का मूल्य समझेंगे, उन्हें कुछ सृजन करने का सन्तोष महसूस होगा और उनमें आत्मविश्वास व आत्म–निर्भरता इतनी बढ़ जाएगी कि हम सोच भी नहीं सकते। ये बच्चे जिन सुन्दर और उपयोगी वस्तुओं को बनाएँगे, उनमें वे खुद को देख पाएँगे। चिन्तन, परिश्रम और उत्कृष्टता हासिल करने का निरन्तर प्रयास उनका दूसरा स्वभाव बन जाएगा। उनके शरीर व आत्मा में ऐसा कुछ विकसित होना शुरू होगा जिससे कि वे शालीन, ईमानदार, सृजनशील, परिश्रमी और सन्तोषी मनुष्य बन सकेंगे।

जैसा कि हरबर्ट रीड कहते हैं, 'किसी बच्चे द्वारा बनाई गई कलाकृति उसके लिए स्वतंत्रता का, उसकी सभी प्रतिभाओं और योग्यताओं के फलीभूत होने का तथा वयस्क जीवन में स्थायी खुशी पाने का प्रवेश द्वार होती है। कला और शिल्प के कार्य बच्चे को खुद से बाहर लाते हैं। यह अकेले की जाने वाली वैयक्तिक गतिविधि की तरह शुरू हो सकती है, जैसे अपने आप में डूबा हुआ कोई छोटा बच्चा एक कागज के टुकड़े पर समझ में न आने वाली लिखाई कर रहा हो या कुछ गूदकर चित्र जैसा बना रहा हो। पर बच्चे का इस अस्पष्ट तरह से लिखना अपनी भीतरी दुनिया को किसी संवेदनशील दर्शक को सम्प्रेषित करने के लिए ही होता है।'

रबीन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है : 'यदि शैक्षणिक प्रक्रियाओं को पूरी मानवता की एकता के लक्ष्य के लिए तैयार किया जाए तो इसकी शुरुआत बच्चे के मन में अपनी माँ के लिए और अपने करीबी परिवार वालों के लिए प्रेम के विकास से होती है, जो अन्ततोगत्वा सार्वभौमिक प्रेम तक पहुँचती है। पर प्रेम की इस एकता की बुनियाद सृजनशीलता में ही होती हैं।'

लकड़ी की शिल्प कला और आज के दौर की शिक्षा में उसकी भूमिका

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5–8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8–11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11–14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
लय 5 मिनिट	लय में तालियों और पैरों की थापों का इस्तेमाल करते हुए, इस दृढ़ वचन के साथ शुरुआत करना कि मैं जो भी करता हूँ, वह अच्छा करता हूँ। एक गोले में खड़े हो जाएँ, हर शब्द के लिए पहली बार ताली बजाएँ, जब यह वाक्य दूसरी बार बोला जाए तो पहले 5 शब्दों पर ताली बजाएँ और पहले शब्द पर पैर की थाप दें, फिर 4 शब्दों पर पैरों की थाप दें। इस तरह यह गतिविधि चलती जाएगी। अन्त में पहले शब्द के लिए ताली बजाएँ और 5 शब्दों के लिए पैरों की थाप दें। इसके बाद सभी शब्दों के लिए पैरों की थाप दें। अब इस प्रक्रिया को उलटा करके करें।	छोटे बच्चों के लय अभ्यास की तुलना में, आगे की ओर कदम बढ़ाते हुए यह कहने की एक अपेक्षाकृत अधिक जटिल लय कि – मैं अपनी राह पर हिम्मत और मजबूती से आगे बढ़ता हूँ। पहले हर एक शब्द के लिए एक कदम चलते हुए आठ कदम आगे की ओर चलें। फिर 7 कदम आगे चले और 1 कदम पीछे चलें, और फिर 6 कदम आगे चलें और 2 कदम पीछे चलें जब तक कि आप पूरी तरह वापस पीछे न आ जाएँ। अब इस प्रक्रिया को उलटा दोहराएँ।	अपने पंजों पर खड़े होकर एक बार में एक वाक्य बोलें। 3 बार, मैं मजबूत हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वास्थ्य हूँ, मैं समृद्ध हूँ, मैं समृद्धि हूँ, मैं चिन्ता नहीं करता/ करती। मैं क्रोध नहीं करता/ करती। मैं अपना काम ईमानदारी से करता हूँ/ करती हूँ। मैं सभी सजीव व निर्जीव चीजों के प्रति प्रेम और सम्मान दिखाता हूँ/ दिखाती हूँ। मैं सभी के प्रति आभारी हूँ। मैं सदा मुस्कुराता रहता हूँ/ रहती हूँ। मैं प्रसन्न हूँ, मैं प्रसन्न रहता हूँ।	मूल्य – सहयोग, एकाग्रता, सकारात्मक सोच और सकारात्मक काम। प्रक्रिया – तालियाँ बजाना और पैरों की थाप देना, अनुशासन। काम – उस स्थान की सफाई करना, और सभी बच्चों को एक गोले में व्यवस्थित करना। न्याय – गोले में एक लड़के के बाद एक लड़की को खड़ा करना। कला – क्रम और लय। अनुरूप बनाए जा सकने की क्षमता – यह गतिविधि किसी भी भाषा में की जा सकती है, और कोई भी सकारात्मक वचन इस्तेमाल किया जा सकता है। अकादमिक – भाषा तथा उच्चारण सीखना, गणना करना, सन्तुलन साधना।
चर्चा शिक्षक सीधे सवाल पूछकर चर्चा की दिशा तय करते हैं	उनके परिवेश में कौन–सी वस्तुएँ लकड़ी की बनी हैं : (मेज, कुर्सियाँ आदि, कागज, पेंसिल, लिखने के पैड, डेस्क, ब्लैक बोर्ड, नोटिस बोर्ड, दरवाजे, खिड़कियाँ, छत इत्यादि)। ये चीजें लकड़ी से क्यों बनाई जाती हैं? इन्हें बनाने के लिए लकड़ी के बजाय और किस सामग्री का इस्तेमाल किया जा सकता है? हमें अपना खाना कहाँ से मिलता है? कौन क्या खाता है? घनत्व से जुड़े हुए लकड़ी के गुणधर्म। सूखी और हरी लकड़ियों के साथ उनके पानी पर तैरते रहने या डूब जाने के प्रयोग। लकड़ी के अन्य कार्य : हवा को शुद्ध करना, छाया देना, अन्य प्राणियों के लिए बसेरा और घर बनाने के लिए उपयोग किया जाना, खाद्य शृंखला का सबसे पहला चरण इत्यादि।	एक ही चर्चा से अलग–अलग वार्तालाप निकलेंगें और बच्चे एक–दूसरे से सीखेंगे। कक्षा के भीतर ही ज्ञान का आधार बनता हुआ दिखाई देगा और बच्चों को अपने साथियों से सीखने में आसानी होगी। इसके अलावा, आगे कुछ और विषयों पर चर्चा कराई जा सकती है जैसे लकड़ी के ताप और विद्युत चालकता के गुणधर्म। ऊर्जा के शाश्वत (नवीनीकरण किए जा सकने वाले) स्रोत के रूप में लकड़ी। वृक्षों के अन्य काम : अन्य जीवन रूपों के लिए आवास निर्मित करने के लिए उपयोग, जैव–विविधता की आवश्यकता होने के पीछे मौजूद कारण।	संसाधित लकड़ी के बारे में तथा रचनात्मकता के साथ बेकार लकड़ियों का इस्तेमाल करने के बारे में और चर्चा की जा सकती है। जीवाश्म ऊर्जा और कोयले के चूरे की ईंटों जैसे स्वरूपों में लकड़ी के उपयोग के अन्य पहलू।	दूसरों को सुनना और उनके नजरिये का सम्मान करना, सीखना। अपने विचारों को बेझिझक होकर बताना और आलोचना को सकारात्मक ढंग से लेना सीखना तथा अपनी गलतियों से भी सीखना। विश्लेषण करना, विचार करना सीखना और अवलोकन के बारे कुछ निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए तर्क करना सीखना। सहयोग, दूसरों का लिहाज करना, आत्म–अनुशासन, आत्म–मूल्यांकन, आत्म–प्रमाणन करना सीखना।

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5–8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8–11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11–14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
बताई जाने वाली **अवधारणा**	विभिन्न पदार्थों पर ध्यान देना सीखना, और उनके उपयोग, गुणधर्म और सम्भावनाओं के बारे में सीखना। अन्य पदार्थों और उनके स्रोतों की सूची बनाना – जैसे कि एल्यूमीनियम, लोहा, तांबा, इस्पात, कपड़ा, पीतल, आदि। बच्चों के परिवेश में, इनमें से प्रत्येक पदार्थ से जो वस्तुएँ बनाई गई हों उनकी सूची बनाना। इस बात को समझना कि पदार्थों को उपयोग करने से पहले संसाधित किया जाता है। इस बात की तरफ बच्चों का ध्यान आकर्षित करना कि पृथ्वी सभी तरह के कच्चे माल की एकमात्र स्रोत है।	अलग–अलग वस्तुओं की तरफ बच्चों का ध्यान दिलाकर उनसे पूछना कि वे किस पदार्थ से बनी हैं। उदाहरण के लिए, बरतन, अलमारी की पट्टी, फर्नीचर, चटाइयाँ, कपड़े, घर, औजार, बिजली के तार इत्यादि। ये वस्तुएँ उन्हीं पदार्थों से क्यों बनती हैं, दूसरे पदार्थों से क्यों नहीं बनतीं? किसी चीज को बनाने के लिए कच्चे माल का उपयोग करने से पहले किन मानदण्डों पर विचार किया जाता है?	चर्चा करें कि पदार्थों के अन्धाधुन्ध ढंग से उपयोग किए जाने के कारण क्या हुआ है? किस तरह पारम्परिक पदार्थों की जगह विघटित न हो सकने वाले प्लास्टिक ने ले ली है? जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई के बगैर, नवीनीकरण किए जा वाले संसाधन के रूप में लकड़ी का उपयोग करने की सम्भावना के बारे में चर्चा करें। कृषि–वन विज्ञान के बारे में तथा लकड़ी के अन्य संसाधित विकल्पों जैसे प्लाईवुड, पार्टिकल वुड, हार्ड बोर्ड और न्यूवुड के बारे में चर्चा करें। लकड़ी का संरक्षण। लकड़ी पर होने वाले प्रभाव जैसे लकड़ी का आड़ा–तिरछा हो जाना, बीच में दरार आ जाना, मुड़ जाना, दीमक लग जाना, छेद करने वाला कीड़ा लग जाना इत्यादि।	विषय की कड़ियों को जोड़ना। अपशिष्ट पदार्थों की मात्रा को कम करने की जरूरत को समझना, पदार्थों के पुन: उपयोग के बारे में जानना और आज के समय में इस्तेमाल करके फेंक दिए जाने वाले उत्पादों के बजाय, दीर्घकाल तक चल सकने वाले उत्पादों को बनाने के लिए उनकी गुणवत्ता को बेहतर बनाने के बारे में समझना।
कहानी सुनाना	इस बारे में एक कहानी बनाएँ कि अगर पेड़ों की भावनाएँ होतीं और वे बोल सकते होते और हमें अपनी जरूरतों के बारे में बता सकते तो क्या होता। पेड़ों को पानी, धूप, हवा के साथ ही एक ऐसे मित्र की जरूरत होती है जो उनकी देखरेख करे।	सजीव कार्टून फिल्में दिखाना, जैसे कि 'द लोरैक्स', जो एक ऐसे शहर के बारे में है जहाँ कोई पेड़ नहीं थे। फिल्म में बताया गया है कि वह शहर ऐसी स्थिति में कैसे पहुँचा और कैसे एक लड़के ने पेड़ों को वापस लाने की ठानी।	बच्चों को पेड़ों को बचाने के लिए हुए चिपको आन्दोलन की कहानी सुनाएँ। आधुनिक चिपको आन्दोलन 1970 के दशक की शुरुआत में उत्तराखण्ड के गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में श्री सुन्दरलाल बहुगुणा के द्वारा प्रारम्भ हुआ था। तब यह क्षेत्र उत्तरप्रदेश में था। वनों के तेजी से हो रहे विनाश के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ यह आन्दोलन शुरू हुआ था।	पेड़ों के महत्त्व को समझना। यह समझना कि पेड़–कार्बन का चक्र किन चरणों से निर्मित होता है। पेड़–पौधों की दुनिया के प्रति सहानुभूति व समानुभूति का भाव पैदा करना।

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5–8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8–11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11–14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
क्षेत्र भ्रमण : किसी पास के बगीचे/ जंगल/ वन/ पेड़ों के गलियारे में जाना। गतिविधियाँ	पत्तियों, फूलों, बीजों का संग्रहण (पौधे से बात करके, उसकी अनुमति लेना, और बाद में उसे धन्यवाद देकर गले से लगाना या चूमना)। क्रेयॉन रंगों का इस्तेमाल करके पेड़ की छालों तथा पत्तियों की छापें बनाना। बच्चों जो कुछ भी अच्छा लगे वे उसका चित्र बनाएँ – जीवन से जुड़ा चित्र।	जंगल में वनस्पति के विभिन्न प्रकारों, और विभिन्न परतों का अवलोकन। उन्हें पत्तियाँ जैसी दिखाई दें, उनका चित्र बनाना। छोटे–छोटे पौधों में जड़ों के तंत्र को समझना, फूलों और उनके विभिन्न भागों को समझना।	मौन ध्यान करना। पौधों, फूलों और पेड़ों के विभिन्न अंगों का चित्र बनाना। फिर दूर दिखाई देने वाले पूरे पेड़ का एकल स्वरूप की तरह चित्र बनाना।	बच्चों को यह समझाने के द्वारा, कि ये सारी चीजें किस तरह बनती हैं, उनके विस्मय बोध को जगाना और उन्हें भावनात्मक रूप से समृद्ध बनाना। उनके मन में पर्यावरण और धरती माँ के लिए श्रद्धा पैदा करना।
बताई जाने वाली अवधारणाएँ	पौधों के उपयोग, पौधों के अंगों के नाम और उनके काम। सब्जियों और फलों के नाम। खाना बनाने में इस्तेमाल होने वाले मसालों के नाम। सामान्य, और दैनिक जीवन में इस्तेमाल होने वाले घरेलू औषधीय पौधे और उनके उपयोग (बच्चे अपने माता–पिता से बात करें, और उन्हें फीडबैक दें)। पत्तियों के प्रकारों, बीजों के प्रकारों, जड़ों के प्रकारों में अन्तर समझना।	पौधों और पेड़ों के काम – जैव विविधता। पौधों की जरूरतें – वे उन्हें कैसे पूरी करते हैं – और यह आश्चर्यजनक तथ्य कि किस तरह पूरी जीती–जागती दुनिया हवा के एक घटक कार्बन डाई आक्साइड से बनती है। किस तरह से पौधे खाद्य शृंखला का पहला चरण होते हैं। किसी अंकुरित बीज की पत्तियों को देखकर यह पहचानने की कोशिश करें कि वह पौधा एकबीज–पत्री है या द्विबीज–पत्री।	दुनिया के जलवायु क्षेत्र – मरुस्थल, घास के मैदान, उष्णकटिबन्धीय वन, सदाबहार वन, आदि। वनस्पतियाँ किस तरह जलवायु सम्बन्धी दशाओं पर निर्भर करती है, और जीव–जन्तु वनस्पति पर निर्भर करते हैं। जंगलों का विनाश – और इसके कारण। जंगलों को साफ करते जाने के बजाय इमारती लकड़ी के पेड़ लगाना – कृषि वन विज्ञान।	अन्य जीवधारियों के साथ समानुभूति अनुभव करने पर जोर देना। पुस्तकों से जानकारियाँ इकट्ठा करने के बजाय बच्चों के भीतर खुद अवलोकन करने की क्षमता पैदा करना ताकि वे ज्ञान निर्मित कर सके। विषयों को सीखते समय आत्म–निर्भरता विकसित करना, तथा उन्हें अलग–अलग देखने के बजाय ज्ञान का संयोजन और एकीकरण करना।
क्षेत्र भ्रमण के आधार पर कक्षा के भीतर की जाने वाली **गतिविधियाँ**	इकट्ठा की गई सामग्री का वर्गीकरण करना – आकार के अनुसार, रंग के अनुसार, बनावट के अनुसार, गुणवत्ता के अनुसार। वर्गीकृत की गई अलग–अलग चीजों की गिनती करना। दिमाग में जिस तरह के रंगों की प्रतिछवियाँ उभरती हों, उन्हें वैसे ही चित्रित करना। हमारे लिए तथा हमारे आसपास स्थित जीवधारियों के लिए पेड़ों के उपयोगों को चित्रों के रूप में व्यक्त करना। क्रेयान्स से उनमें रंग भरना।	साथियों, माता–पिता और शिक्षकों की मदद से इकट्ठा किए गए विभिन्न पौधों को पहचानना। उनके उपयोगों की सूची बनाना और वनस्पतियों का संग्रह करके उनकी श्रेणियाँ बनाना। विभिन्न प्रकार के पौधों और उनके उपयोगों की एक तालिका बनाना और उनमें इमारती लकड़ी की किस्मों की पहचान करना। अपनी पसन्द के किसी एक पेड़ या पौधे के बारे में एक कविता लिखना। पौधों के लिए किए गए इस भ्रमण के अनुभव, उन्होंने क्या देखा इत्यादि के बारे में लिखना।	ज्यादा गहराई से महसूस करके लिखना। जंगल के भ्रमण के बारे में एक कार्टून पट्टी भी बना सकते हैं। किसी पेड़ को देखकर उसकी संरचना को समझना, उसकी शाखाएँ किस तरह बढ़ती हैं और पेड़ का सन्तुलन कैसा है। पहले एक पत्ती का चित्र बनाना, फिर शाखा का, और फिर पेड़ के पूरे स्वरूप का। चित्र बनाते समय ध्यान में रखना कि पत्तियों का आकार कैसा है और शाखाएँ किस प्रकार ऐसे ढंग से बढ़ती हैं कि पेड़ या पौधे की स्थिरता और मजबूती बनी रहती है।	सीखने का वर्गीकरण, पत्तियों और बीजों का उपयोग करके गिनती करना सीखना। विचारों को तस्वीरों से प्रगट करना सीखना। पेड़ों और पौधों का वर्गीकरण करना सीखना, उनके वैज्ञानिक नामों को सीखना, प्रचलित नामों को सीखना, वैज्ञानिक नाम रखने की प्रणाली की जरूरत का कारण जानना, पौधों के उपयोगों को जानना। तालिकाएँ बनाना सीखकर जानकारियों को वर्गीकृत करके उन्हें आसानी से ढूँढ़ने योग्य बनाना। भाषा– कौशल का विकास, शब्दों में विचारों को प्रगट करना। कविताएँ लिखने के लिए भाषा के उपयोग में रचनात्मकता लाना। वस्तुएँ जैसी हैं उनकी व्याख्या में दिमाग लगाए बगैर उन्हें वैसे ही देखना और उनका चित्र बनाना। इससे अवलोकन कौशल बेहतर होता है। पेड़ों से जुड़ी रेखागणित की तथा स्वरूप और स्थायित्व सम्बन्धी बुनियादी बातों को समझना।

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5—8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8—11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11—14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
क्षमताएँ	आकार, रंग, बनावट के आधार पर वर्गीकरण करना। दहाईयों का इस्तेमाल करते हुए बड़ी संख्याओं को गिनना, पत्तियों और फूलों के बीच अन्तरों का अवलोकन, इन अन्तरों को पहचानना विभिन्न पत्तियों, डंडियों और पत्थरों का इस्तेमाल करके कोलाज बनाना।	जंगल की विभिन्न परतें। पौधों के प्रकार — कई तरह की घासें, जड़ी—बूटियाँ, झाड़ियाँ, पेड़, हवा और वर्षा के सहारे पनप कर दूसरे पेड़ों पर फैलने वाली गैर—परजीवी लताएँ (एपीफाइट्स), दूसरे पेड़ों पर पलने वाली परजीवी लताएँ। विभिन्न प्रकार के पेड़ों की तालिका बनाएँ जिनमें सामने उनके उपयोग दर्ज करें, जैसे कि ईंधन के लिए या इमारती लकड़ी, औषधि, खाद्य वस्तुओं और फलों के लिए या फिर बसेरा निर्मित करने के लिए (बरगद का पेड़), आदि। पौधों तथा पेड़ों की जरूरतें तथा वे खुद उन्हें कैसे पूरा करते हैं।	पेड़—पौधों तथा पशु—पक्षियों के विभिन्न जीवन रूपों की जैव—विविधता। पारिस्थितिक तंत्र में पौधों का कार्य। आपस में जीवरूपों की पारस्परिक निर्भरता एवं सहजीविता। ऊर्जा संश्लेषण के स्रोत के रूप में, और इस तरह पृथ्वी पर समस्त जीवधारियों के स्रोत के रूप में पेड़ों की भूमिका। कोणों की अवधारणा, किस प्रकार प्रकृति में न्यून कोण पाए जाते हैं और किस तरह त्रिभुज सबसे मजबूत स्वरूप होता है इत्यादि।	पेड़ों और झाड़ियों को पहचानना सीखना, पेड़, पौधों के स्वरूप को देखकर उनके औषधीय उपयोगों को जानना तथा याद रखना। प्रकृति में जैव—विविधता की आवश्यकता को समझना और उसे पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य से जोड़ना। प्रकृति के प्रति धन्यवाद का भाव विकसित करना। सन्तुलन के बारे में सीखना, जड़ों के तंत्रों, शाखाओं की संरचनाओं और पत्तियों तथा फूलों और बीजों की संरचनाओं को समझना, जिनके कारण परागण और प्रसारण में मदद मिलती है। अवलोकन के कौशलों को सीखना, चित्र बनाने की योग्यता, आत्म—अभिव्यक्ति सीखना और रंगों के नाम जानना।
किसी कार्य का शैक्षणिक प्रदर्शन	बच्चे ध्यानपूर्वक बढ़ई को काम करता हुआ देखते हैं।	बच्चे किसी ऐसे व्यक्ति को खोज लेते हैं जो लकड़ी का बेहतरीन काम करता हो और वे उनसे स्कूल आकर उनके लिए कुछ बनाने का अनुरोध करते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान वे लोगों से बात करते हैं और उपयुक्त बढ़ई का पता लगा लेते हैं।	सभी बच्चे गौर से बढ़ई महाशय को काम करता हुआ देखते हैं और जो भी बात उन्हें रोचक लगती है उसके बारे में उनसे बातचीत करते हैं। उनसे यह पता करने की कोशिश करें कि उन्होंने यह कला कैसे सीखी और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति कैसी है।	बढ़ई को काम करता हुए देखने के दौरान विभिन्न औजारों के उपयोगों के बारे में सीखना। पारम्परिक हस्तकलाओं को बढ़ावा देने की जरूरत को समझना। सौन्दर्य बोध और रचनात्मकता विकसित करना।
क्षेत्र भ्रमण : बढ़ई के साथ स्थानीय आरा मशीन कारखाने को देखने जाना	इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए इस गतिविधि की जरूरत नहीं है।	पेड़ के तने को आड़ा काटने पर उस पर बने हुए वार्षिक वृक्ष वलयों (ट्री रिंग्स) का निरीक्षण करना, और जानना कि किस तरह उनसे पेड़ों की आयु का पता लगाया जाता है।	विविध प्रकार की इमारती लकड़ी की विभिन्न किस्में और उनके मूल पेड़। ऐसी लकड़ी की किस्मों की लागतें — लकड़ी को मापने की इकाई के बारे में सीखना।	मौसमों के पौधों पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में सीखना और जानना कि पेड़ समय को कैसे दर्ज करते हैं। वार्षिक, द्विवार्षिक और सदाबहार किस्म के पौधों के बारे में जानना।

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5–8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8–11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11–14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
अवधारणाएँ		लम्बाई को मापने की इकाई सीखना और इमारती लकड़ी की लागत का पता करना। आरा मशीन से होने वाली चिराई में बचने वाली, छिल्पियों, कतरनों और टुकड़ों से क्या बनाया जा सकता है? लकड़ी को संरक्षित करने तथा उसे मजबूत और टिकाऊ बनाने की प्रक्रिया जानना। बाँस के लचीलेपन की ताकत उसे बहु–उपयोगी बना देती है। यदि उसे छेद करने वाले कीड़ों और दीमकों से बचाया जा सके तो यह लगभग कई चीजों में स्टील की जगह ले सकता है।	लकड़ी के निर्यात और आयात के बारे में जानना। उसकी लागत और उपलब्धता का विवरण। स्थानीय रूप में उपलब्ध इमारती लकड़ी की किस्मों और उनके विशेष उपयोगों के बारे में जानना। जंगलों के कटने का मिट्टी पर, और वन्य प्राणियों की आबादियों पर पड़ने वाले प्रभाव। खेती के लिए इसका निहितार्थ – मनुष्य के और वन्य जीवन के हितों के टकराव को समझना।	वर्ग फुट और घन फुट में गणना करना। आयतन की अवधारणा और इसे कैसे मापा जाता है, यह सीखना। विभिन्न ठोस आकृतियों के आयतनों के बारे में सीखना और जानना कि उनकी गणना कैसे की जाती है। लघुत्तम (एलसीएम) और महत्तम (एचसीएफ) की अवधारणाओं का उपयोग करते हुए लकड़ी को इस तरह काटना कि कम से कम लकड़ी बरबाद हो। पौधों की बढ़त और उनके रस की प्रसार गति से चन्द्रमा की घटती, बढ़ती कलाओं का सम्बन्ध। उदाहरण के लिए, बाँस की कटाई पारम्परिक रूप से अमावस्या के आसपास की जाती है, क्योंकि तब रस कम होता है और इसलिए कीटों के हमले की सम्भावना भी कम होती है।
लकड़ी की वस्तुएँ बनाने की गतिविधि	पहले से तैयार की गई ऐसी सामग्री का उपयोग करना, जिसमें असली स्क्रू, लकड़ी की कीलों और असली लोहे के नट–बोल्टों, पेंचकस, लकड़ी के हथौड़े, आदि को इस्तेमाल करने का समावेश किया गया हो। लकड़ी के एक टुकड़े या नारियल के एक खोल को लेकर उसे रेगमाल से तब तक घिसना जब तक वह चिकना न हो जाए और फिर इससे कप व चमचे बनाना।	छोटे वसूलों, हथौड़ों, आरी आदि का उपयोग करते हुए कोई सरल खिलौना बनाना। उदाहरण के लिए एक भौंरा या बल्ला, गिल्ली डंडा, या एक खचोड़ने वाला खिलौना आदि बनाना।	तीन चीजें बनाना : पहली : उनकी पसन्द की कोई चीज दूसरी : कोई उपयोगी वस्तु, जैसे कि जूतों का स्टैंड, पत्रिकाएँ रखने का स्टैंड या एक छोटा स्टूल आदि। तीसरी : सौन्दर्य बोध वाली कोई चीज, जैसे कि पेन रखने का स्टैंड, तस्वीर का फ्रेम आदि।	सक्षम होने की अनुभूति, सन्तोष और तृप्ति का एहसास होना। अपनी योग्यता और खामियों के बारे में जानना, साथ ही धैर्य और लगन सीखना। हाथ के सधे और स्थिर होने का महत्त्व समझना और उसे दिमाग के द्वारा समस्याओं को सुलझाकर, हृदय की सृजनात्मकता के साथ जोड़ना।

गतिविधि	आयु वर्ग/ कक्षा 5–8 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 8–11 वाले वर्ष	आयु वर्ग/ कक्षा 11–14 वाले वर्ष	सीखी गई प्रवृत्तियाँ
क्षमताएँ और अवधारणाएँ	जब ऐसे काम किए जाते हैं, तब मौन रहने की जरूरत को समझना। लकड़ी के टुकड़ों के विभिन्न प्रकार के सम्भव जोड़ों के बारे में जानना। उनकी आकृतियों, आकार और परस्पर संगत बैठने का निरीक्षण करना। मापने के गैर–मानकीकृत औजारों का उपयोग करते हुए नापना। हाथों और आँखों में तालमेल बिठाना और साथ काम कर रहे लोगों के साथ समन्वय तथा सहयोग करना। सृजनात्मक ढंग से सोचना।	बनाई गई चीजों के अनुसार अवधारणाएँ जोड़ें (उदाहरण के लिए, यदि एक भौंरा बनाया है – तो घूर्णन की गति समझाना। इसी प्रकार गिल्ली–डंडा, गेंद–बल्ला, सिर्फ गेंद, खचोड़ने वाला खिलौना आदि के सन्दर्भ में, प्रक्षेपण मार्ग पर गति, सीधी रेखा में गति, लयपूर्ण या आवर्ती गति और चक्रीय गति आदि की अवधारणा समझाना। कौन–सी चीजें धुरी पर घूमती हैं या घूर्णन करती) हैं : जैसे कि पृथ्वी – अक्ष या धुरी की अवधारणा समझाना। यह समझाना कि पृथ्वी पर रात और दिन का होना, पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण होने वाला प्रभाव होता है। जबकि, ऋतुएँ सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की चक्रीय गति के कारण होती हैं।	बल की अवधारणा और वह कैसे कार्य का होना सम्भव बनाता है। घर्षण की अवधारणा और उसके द्वारा गति को कैसे रोका जाता है। आवेग की अवधारणा और हम बस में कैसे तब अपनी सीट पर आगे की ओर धकेल दिए जाते हैं, जब बस अचानक रुकती है। सापेक्षिक गति की अवधारणा – जब हम एक दिशा में जाते हैं तब चीजें विपरीत दिशा में गति करती हुई प्रतीत होती हैं। जब हम किसी भी तरफ और कितनी भी तेज चलते हैं तो किस तरह चन्द्रमा हमारा पीछा करता हुआ प्रतीत होता है। ऐसे खिलौने बनाना जो चारों ओर विभिन्न प्रकार की आवाजें निकालते हुए चक्कर लगाते हैं (अरविन्द गुप्ता की किताब में ढेरों ऐसे खिलौने बताए गए हैं)।	कौशलों को सीखना, वस्तु की ऊपर से दिखने वाली आकृति और बगल से दिखने वाली आकृति के चित्र बनाना। इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री और उसके आकार तय करना – लकड़ियों या संसाधित लकड़ियों के प्रकार तय करना। सामग्री का इंतजाम करना, उसकी लागत और मेहनत का आकलन करना। बनाई गई वस्तु की कीमत तय करना। अपने श्रम के मूल्य को जायज ठहराना (स्वयं की गरिमा)। औजारों को किस तरह इस्तेमाल करना और व्यवस्थित ढंग से रखना। अतिरिक्त अवधारणाएँ – एक छोटी–सी प्लास्टिक की बोतल लेना, उसे काटना, उसे पानी से आधा भरना, उसमें एक रस्सी बाँधकर उसे तेजी से घुमाना और ध्यान से देखना कि घुमाते समय बोतल से पानी नहीं गिरता। अपकेन्द्री तथा अभिकेन्द्री बलों की अवधारणाओं को समझना। किसी भौंरे को रस्सी लपेट कर फिर तेजी से फेंकने पर उसके घूमने की छानबीन करना और उसे भी समझना! इसी प्रकार चर्खे और तकली के घूमने को समझना। एक रंगीन चकरी बनाना।
चर्चा और रंगमंच	इस पर चर्चा करना कि पारम्परिक हस्तकलाएँ क्या हैं और वे किस प्रकार मर रही हैं : पारम्परिक हस्तकलाओं के धीरे–धीरे नष्ट होने के विषयसूत्र के आधार पर तीनों आयु समूहों के बच्चों से, उनकी योग्यता और समझ के अनुसार सामूहिक रूप से अलग–अलग कहानियाँ लिखवाना और फिर उन्हें एक नाटक में परिवर्तित करना। नाटक की पटकथा लिखने में शिक्षक या सहायक मदद करेगा। फिर उस नाटक को पूरे स्कूल के सामने मंच पर प्रस्तुत करना।			भाषा की योग्यता, आत्मविश्वास, सामूहिक सृजनात्मकता आदि का विकास करना।

मुम्बई में जन्मी और पली–बढ़ी, **मीनाक्षी** उमेश ने सर जे. जे. कालेज ऑफ आर्किटेक्चर से आर्किटेक्चर की स्नातक उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने पुदूचेरी के पास ऑरोविल में कम लागत के पर्यावरण–अनुकूलित आवास निर्मित करने की प्रौद्योगिक विधियों पर काम किया है। कई वर्षों तक उन्होंने अपने सहचर उमेश के साथ तमिलनाडु के धरमपुरी जिले में कृषि, भवन निर्माण और शिक्षा की वैकल्पिक पद्धतियों पर काम किया है। सन 2000 में उन्होंने रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी और ई. एफ. शूमाखर की विचारधाराओं पर आधारित एक स्कूल प्रारम्भ किया, जिसमें मारिया मॉंटेसरी, डेविड हॉर्सबर्ग, रूडोल्फ स्टाइनर और जैनेट तथा ग्लेन डोमेन द्वारा प्रदर्शित की गई शिक्षण पद्धतियों का उपयोग किया जाता है। अब वे दोनों पुविधाम रूरल डेवलपमेंट ट्रस्ट का संचालन कर रहे हैं जो प्रभावकारी जैविक खेती की तकनीकें विकसित करने का कार्य करता है और तमिलनाडु में धरमपुरी के नागरकूडल क्षेत्र के बच्चों को मानवीय तथा बाल–केन्द्रित शैक्षिक वातावरण प्रदान करने के लिए कार्यरत है। अधिक जानकारी के लिए, www.puvidham.org को देखें। उनसे puvidham@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।